मासिक पत्रिका फरवरी 2019

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	विजय भाटिया	अमर सिंह पहल
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

कालजयी कृति के लेखक युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति को नमन जन्मदिवस - 1 मार्च

सत्यार्थ प्रकाश: एक समाज वैज्ञानिक दृष्टि

-'पद्मश्री' डॉ. श्याम सिंह शशि

एम.ए., पी-एच.डी., आगरा वि.वि., डी.लिट् (एंथ्रोपोलॉजी), दिल्ली वि.वि.

वैदिक वाङ्मय ज्ञान-विज्ञान का विश्वकोष है तो 'सत्यार्थ प्रकाश' को विश्वकोषों का 'विश्वकोष' कहा जा सकता है। वस्तुत: 'सत्यार्थ प्रकाश' केवल एक धर्मग्रन्थ ही नहीं, अपितु एक जीवन दर्शन है, जिसका पूर्वार्द्ध दस दिशाओं का प्रतीक है तथा उत्तरार्द्ध चारों ओर फैले अंधविश्वासों के तमस को तिरोहित करने के लिए बेबाक सत्य का प्रकाश प्रदान करता है। जनहित में वैचारिक सर्जरी का होना स्वाभाविक है जो कुछ क्षणों के लिए कटु तथा कष्टदायक लगता है किन्तु उसका उद्देश्य अन्तत: स्वस्थ चिन्तन, विश्व कल्याण एवं विश्व शांति का वातावरण निर्मित करना है। 'सत्यार्थ प्रकाश' को लिखने का भी यही मन्तव्य रहा है जिसमें युग चिन्तक महर्षि दयानन्द ने नीर-क्षीर विवेक की तर्कशैली अपनाई है तथा ऋषि परम्परा का निर्वहन किया है। महर्षि 'सत्यार्थ प्रकाश' की भूमिका में लिखते हैं- "मेरा इस ग्रंथ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसका मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।"

ऋषिवाणी का यह कथन 'सर्वजन हिताय' लेखन शैली को और अधिक तथ्यात्मक तथा धारदार स्वरूप प्रदान करता है। ऋषि का अभीष्ट किसी का दिल दुखाना नहीं, बल्कि प्यार का पारावार देना है। इसी सन्दर्भ में वे आगे लिखते हैं-"मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य को जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है, परन्तु इस ग्रंथ में ऐसी बात नहीं रखी है और न किसी का मन दुखाना व किसी की हानि का तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।"

'सत्यार्थ प्रकाश' की सामग्री पर दृष्टिपात करें तो हमें उसमें ज्ञान के माणिक मुक्ता का अक्ष्य भंडार मिलेगा। उसके चौदह अध्यायों में जिस अनुक्रम से सामग्री का प्रस्तुतीकरण किया गया है, वह किसी भी महान लेखक की प्रतिभा के अनुरूप है। स्वामी जी ने अध्यायों को अध्याय न कहकर 'समुल्लास' कहा है जो उनके मौलिक लेखन को प्रमाणित करता है। इन समुल्लासों की विषय सामग्री इस प्रकार है - **प्रथम समुल्लास** में ईश्वर के ओंकारादि नामों की व्याख्या, **द्वितीय समुल्लास** में सन्तानों की शिक्षा, **तीसरे समुल्लास** में ब्रह्मचर्य, पठन-पाठन व्यवस्था, सत्यासत्य ग्रन्थों के नाम और पढ़ने-पढ़ाने की रीति है। **चतुर्थ समुल्लास** में विवाह और गृहस्थाश्रम का व्यवहार है। **पंचम** में वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम की विधि, **छठे समुल्लास** में राजधर्म, **सप्तम** में वेदेश्वर विषय हैं। **समुल्लास आठ** में जगत की उत्पत्ति और प्रलय है। **नवें समुल्लास** में विद्या, अविद्या बन्ध और मोक्ष की व्याख्या है। **समुल्लास दस** में आचार, अनाचार और भक्ष्याभक्ष्य विषय हैं। **एकादश समुल्लास** में आर्यावर्तीय

मत-मतान्तर का खण्डन- मण्डन विषय हैं **द्वादश समुल्लास** में चारवाक, बौद्ध और जैन मत का विषय लिया गया है। **तेरहवें समुल्लास** में ईसाई मत का विषय तथा **चौदहवें समुल्लास** में मुसलमानों के मत का विषय समीक्षात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

उपर्युक्त सामग्री से विदित होगा कि स्वामी जी ने न तो किसी नये धर्म की स्थापना की और न ही किसी गुरुडम को बढ़ावा दिया। वस्तुत: इस ग्रन्थ को यदि **पांचवें वेद** की संज्ञा दी जाये तो उससे 'वेद' शब्द का विस्तार ही होगा, जिसका अर्थ 'ज्ञान' होता है। हम इसे वेद की पृष्ठभूमि पर आधारित ज्ञान की समालोचना-प्रत्यालोचना भी कह सकते हैं। वास्तव में 'सत्यार्थ प्रकाश' में नवधा भक्ति जैसे प्रयोग भले ही न मिलें, किन्तु ईश्वर की व्याख्या करते समय उसके सौ नामों में 'ओम' को सर्वाधिक महत्व देना उनके वैज्ञानिक विश्लेषण का परिचायक है। मानव जीवन के सौ वर्षों का समग्र स्वरूप दृष्टि में रखते हुए स्वामी जी ने उसे ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास, चार आश्रमों की एक स्वस्थ दिशा प्रदान की है।

हम यहाँ स्वामी जी के समरस चिन्तन को दृष्टि में रखते हुए 'सत्यार्थ प्रकाश' के दो समुल्लासों के अंश प्रस्तुत करना चाहेंगे जिनसे स्पष्ट होगा कि स्वामी जी ने सत्य के संधान में किसी को नहीं बख्शा। उन्होंने सबसे पहले अपने घर के हिन्दू धर्म की ही खूब आलोचना की तथा 11वें समुल्लास में मूर्तिपूजा का जमकर खंडन किया। यानि उन्होंने पहले अपने ब्राह्मण समाज को नाराज किया और उसके बाद सिख, जैन, बौद्ध तथा हिन्दू समाज के मत-मतान्तरों के अनुयायियों को। यही कारण है कि 'सत्यार्थ प्रकाश' के विरुद्ध **सर्वप्रथम आलाराम** नाम के एक सिंधी हिन्दू संन्यासी ने इलाहाबाद कोर्ट में याचिका दायर की। संभवत: वह अंग्रेज़ों को खुश करना चाहता था, इसलिए उसने इस ग्रन्थ में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध व्यक्त राजद्रोह का अभियोग चलाया जिसे जस्टिस हैरिसन ने स्वयं अंग्रेज होते हुए भी **खारिज** कर दिया। वर्ष 1944 में सिंध में मुस्लिम लीगी शासन था। वहाँ किसी **सिरफिरे मुसलमान** ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के 14वें समुल्लास पर बेन करने के लिए कराची में मुकदमा दायर किया जो कई पेशियों में बहस सुनने के बाद **खारिज** कर दिया गया। इसी प्रकार 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्य समाज के विरुद्ध समय-समय पर बहुत से मुकदम चलाए गए जिनमें विरोधियों को मुँह की खानी पड़ी।

इसी तरह **जातिप्रथा तथा अस्पृश्यता** के विरुद्ध, बुद्ध, महावीर, कबीर, नानक के बाद स्वामी दयानन्द, विवेकानन्द, महात्मा फुले, गाँधी जी और डॉ. अम्बेडकर आदि ने आवाज उठाई थी। फलत: अस्पृश्यता तो काफी कम हो गई किन्तु वोट बैंक के कारण जाति-प्रथा के स्थान पर जातिवाद बढ़ता गया। उन्होंने मनुस्मृति के श्लोकों को उद्धृत करते हुए प्रमाणित किया कि स्त्री और **शूद्रों को वेद पढ़ने** का पूर्ण अधिकार है। मनु की वर्ण व्यवस्था जन्म पर नहीं बल्कि **कर्म पर आधारित थी**।

'सत्यार्थ प्रकाश' में यद्यपि किसी प्रकार के आरक्षण की बात नहीं की गई किन्तु **कर्म** पर आधारित वर्णानुसार यथायोग्य कार्य करने पर जोर अवश्य दिया गया। गौतम बुद्ध, महावीर आदि ने **जाति प्रथा** का डटकर विरोध किया था। बहुत से संत महात्माओं ने समाज सुधार का बीड़ा उठाया किन्तु आज तक जाति प्रथा का उन्मूलन नहीं हो सका। स्वयं इन समुदायों में भी खामियाँ पैदा हो गई जिनको स्वामी जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में उजागर किया।

स्वामी जी की मृत्यु पर मुस्लिम नेता सर **सैयद अहमद खाँ** ने कहा था-"स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुयायी उन्हें देवता स्वरूप मानते हैं जो वास्तव में सही लगता है। उन्होंने एकमात्र निराकार परमेश्वर की उपासना करने की शिक्षा दी, किसी और की नहीं। वे इतने बड़े विद्वान् थे कि वे अपने अनुयायियों के पूज्य बन गये थे। वह ऐसे आदमी थे जिनके समतुल्य आज इस समय तमाम हिन्दुस्तान में कोई नहीं है।"

रोमा रोलां ने स्वामी जी के बारे में कहा था-"दयानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व अद्‌भुत है। वह शेर के समान हैं। वह एक ऐसा आदमी है कि जिसे यूरोप भारत का मूल्यांकन करते समय कभी नहीं भुला पायेगा। उसमें व्यावहारिक विचारक तथा मनीषी नेतृत्व का विरल सामंजस्य था।" **प्रो. मैक्समूलर** ने उनके वेद भाष्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की तो **एच.ओ. ह्यूम** ने उन्हें महान पुरुष मानकर अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। **सी.एफ. एन्ड्रयूज़** ने स्वामी जी के ग्रन्थों के सम्बन्ध में लिखा था-"अनेक विद्वानों ने वैदिक अध्ययन के आधार पर पुस्तकें लिखी हैं जिन्हें कालांतर में भुला दिया गया। किन्तु एक ऐसा संन्यासी भी था जिसकी अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्नता तथा श्रेष्ठ नैतिक मूल्यों के कारण अतीत नए रूप में प्रकट हुआ। स्वामी दयानन्द की उपस्थिति भारत के लिए एक वरदान बनकर आई।" स्वामी जी के शास्त्रीय कृतित्व तथा व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए देश-विदेश के विद्वानों तथा विचारकों ने उनसे प्रेरणा ली। प्रो. आर.एल. टर्नर, डॉ. स्टेन, डॉ. जेम्स एस कजनस, साधु वासवानी, महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, श्री अरविन्द, डॉ. राधाकृष्णन आदि ने भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण के परिप्रेक्ष्य में स्वामी जी को श्रद्धा-सुमन अर्पित किए थे।

मसालों में सर्वश्रेष्ठ 'हींग'

साभार: आर्यावर्त केसरी-अमरोहा

कृष्णमोहन गोयल

हींग रसोईघर की पहचान है। प्रत्येग गृहणी हींग का प्रयोग अवश्य करती है। यह संक्रामक रोगों को विराम देता है। साथ ही-

(1) हींग उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने में सहायक है। हींग में कोडयारिन तत्व खून को पतला करने में सहायक है। बढ़े हुए कालेस्ट्रोल को कम करता है।

(2) लो ब्लड प्रेशर में हींग के पाउडर में थोड़ा सा नमक मिला कर पानी के साथ पीने से फायदा होता है।

(3) नियमित हींग के सेवन से ज्यादा इंसुलिन बनती है। ब्लड शुगर को नियंत्रित करती है।

(4) उदर में गैस समस्या होने पर हींग को पानी में घोलकर नाभि पर लेप करें, लाभ होगा।

(5) उदर रोगों में हींग को पानी में घोलकर पीने से लाभ होता है।

(6) भोजन बनाते समय एक चुटकी हींग भोजन को स्वादिष्ट बना देती है।

(7) खटमलों से छुटकारा पाने के लिए एक चुटकी हींग को गर्म पानी में घोलकर खटमलों के ऊपर छिड़काव करने से लाभ होता है। ■■

फरवरी 2019 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
03	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	क्या आर्य समाज को देश की राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहिए।
10	आचार्य सुरेश शास्त्री (9818129595)	ऋतुओं के अनुसार जीवन का सामंजस्य।
17	आचार्य संजय याज्ञिक (9756777958)	महर्षि मनु की मनुस्मृति में मुख्य विचार।
24	श्री लक्ष्मीकान्त (9897666491)	सुमधुर भजन

जनवरी मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्रीमती ललिता दारा	5,000/-	श्रीमती प्रेम सहगल	1,100/-	श्री राजन सपरा	1,000/-
श्री रंजन कुमार रैलिन	5,000/-	श्री एस.सी. सक्सेना	1,100/-	श्री विजय मेहता	1,000/-
श्री आत्म प्रकाश रैलिन	5,000/-	श्री नरेश ठुकराल	1,100/-	श्री के.के. कौल एवं परिवार	700/-
सुश्री नीलम रैलिन	3,000/-	श्रीमती शशि मल्होत्रा	1,100/-	श्री वेद प्रकाश चावला	600/-
श्रीमती सरोज अबरोल	2,100/-	श्री आर.के. सुमानी	1,000/-	श्री रमन पुरी	500/-
श्री अरुण कुमार बहल	1,100/-	श्रीमती चन्दु सुमानी	1,000/-	श्री सुख सागर ढींगरा	500/-
सुश्री दीपिका सहाय	1,100/-	श्री गौरव सुमानी	1,000/-	श्री वीरेन्द्र चोपड़ा	500/-

वैदिक सैन्टर के लिए प्राप्त दान राशि :

- ❖ श्री राजीव मोहन वर्मा ₹ 50,000/-
- ❖ श्री अचिन्त अरोड़ा ₹ 11,000/-
- ❖ श्रीमती अनिता मलिक ₹ 11,000/-
- ❖ श्रीमती सतीश सहाय ₹ 5,000/-

महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ-

❖ **लोहड़ी एवं मकर सक्रांति पर्व:** आर्य समाज के प्रांगण में रविवार, 13 जनवरी, 2019 की सायं लोहड़ी पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम यज्ञ से आरम्भ हुआ। आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी ने लोहड़ी और मकर सक्रांति पर्व के बारे में विस्तार से बताया। तत्पश्चात् सभी ने लोहड़ी जला कर पर्व उत्साह पूर्वक मनाया। अन्त में प्रसाद वितरण और जलपान का कार्यक्रम किया गया। इस समारोह लगभग 100 व्यक्तियों ने भाग लिया।

❖ **माघ माह यज्ञ** - प्रति वर्ष की भांति आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 में माघ माह यज्ञ चल रहा है। **दैनिक कार्यक्रम** दिनांक **14 जनवरी 2019 से 13 फरवरी 2019 (सोमवार से शनिवार)** तक **प्रात: 10:30 से 12:00 बजे** तक होता है। **पूर्णाहुति व समापन समारोह, गुरुवार, 14 फरवरी 2019 प्रात: 10:00 से दोपहर 1:15 बजे** तक मनाया जाएगा। आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

आर्य समाज कैलाश
ग्रेटर कैलाश-1

Rotary
Club Delhi South

In Association with

Singer® & Microsoft®

नौकरी और स्वयं कार्य कुशलता के लिये

21वीं सदी

कौशल विकास केन्द्र

दाखिला आरम्भ

सिलाई और डिजाइनिंग सिंगर® के द्वारा (महिलाओं के लिये)

- सर्टिफिकेट कोर्स - तीन महीने (प्रत्येक माह ₹ 100/-)
- डिप्लोमा कोर्स - छः महीने (प्रत्येक माह ₹ 100/-)

माइक्रोसॉफ्ट द्वारा प्रमाणित कम्प्यूटर कोर्स

बेसिक कोर्स : शुल्क ₹300/- प्रत्येक माह

- MS® ऑफिस और इंटरनेट ₹300/- प्रत्येक माह
- डेस्कटॉप पब्लिशिंग ₹500/- प्रत्येक माह
- वेबसाइट डिजाइनिंग ₹500/- प्रत्येक माह
- ऐन्ड्रोइड ऐप्लीकेशन ₹500/- प्रत्येक माह

समय :
2 PM - 5:00 PM
सोम - शुक्र

विशेष कोचिंग शुरुआती लोगों के लिए

स्थान : आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1

B-31/C, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली-110048

दाखिले व जानकारी के लिए सम्पर्क करें 011-29240762, 46678389

Tailoring : Sunita : 9899228471 **Computer** : Rahul : 9555662526

LAPAROSCOPIC & GENERAL SURGERY

सामान्य एवं दूरबीन सर्जरी सुविधाएँ

FACILITIES AVAILABLE

- Biopsy
- Dressings
- Stitching
- Cancer Screening
- Incision & Drainage of Abscess
- परामर्श शल्य चिकित्सा
- कैंसर सम्बन्धी जानकारी
- लघु शल्य क्रियाऐं

Dr. (Prof.) Vinod K. Malik

Experienced Senior Consultant,
Co-Chairman, Sir Ganga Ram Hospital
General and Laparoscopic Surgeon

Tuesday & Friday : 9:00 A.M. to 10:00 A.M.

AMRIT PAUL ARYA SHISHU SHALA

(A Unit of Arya Samaj Kailash-Greater Kailash-I)
B-31-C, Kailash Colony, New Delhi-110048
Phone : 011-46593498 • E-mail: aparyashishushala10@yahoo.com

The Governing body of Amrit Paul Arya Shishu Shala
Cordially invites you on the

41st Annual Day Celebrations

On Saturday the 16rd February, 2019

Timing : 10:00 am to 11:30 am

PROGRAMME

Chief Guest : ***Smt. Shikha Rai***
Chairperson Standing Committee (SDMC)

Guest of Honour : ***Sh. Narender Ghai***
EX- Addl. Director (Edu) , Presently Consultant Education

: ***Dr. Sanjay Chaturvedi***
Deputy Director, GNCT of Delhi

Programme :

- *Welcome and Deep Prajwalan by the Chief Guest*
- *Annual Progress Report*
- *Cultural Programme by school Children*
- *Distribution of awards to students*
- *Address by the Chief Guest*
- *Thanks & Shanti Path*

ARCHANA VIR
Head Mistress

AMRIT PAUL
Manager

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-1

AMAR SINGH PAHAL
Treasurer

R.K. VERMA
Secretary

V.K. LAKHANPAL
President

॥ ओ३म् ॥

सत्यार्थ प्रकाश की कक्षाएँ

स्वर्णिम अवसर

निःशुल्क कक्षाएं

अध्यापक : आचार्य इन्द्र देव जी (वैदिक प्रवक्ता)

आर्य समाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश–1

सोमवार 18 फरवरी, 2019 से शनिवार 23 फरवरी, 2019 तक

समय : सायं 5:00 बजे से सायं 7:00 बजे तक

स्थान : आर्य समाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश–1, नई दिल्ली–48

प्रियबन्धु,

सत्यार्थ प्रकाश स्वामी दयानन्द जी सरस्वती द्वारा निर्मित ग्रंथ है। महर्षि दयानन्द ने इस ग्रन्थ की रचना करके मानव जाति का अवर्णनीय उपकार किया है। सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करना ही इस ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य है, **"जो जैसा है, उसको वैसा ही कहना और बताना, जो सत्य के अर्थ को प्रकाशित करे–वही सत्यार्थप्रकाश है" "सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।"**

सत्यार्थ प्रकाश एक आदर्श आचार संहिता के रूप में हमारा मार्गदर्शन करता है। इसमें मनुष्य मात्र को अपने कर्तव्य, अकर्तव्य, धर्म–अधर्म, भक्ष्य–अभक्ष्य का सम्यक बोध होता है। यह ग्रन्थ वैदिक धर्म के सभी ग्रन्थों का सार प्रस्तुत करता है। सत्यार्थप्रकाश का आधार वेद, सत्य, सृष्टिक्रम, विज्ञान, तर्क, प्रमाण, आदि हैं। जिसने इसे एक बार पढ़ व सुन लिया, उसकी सोच, दृष्टि–विचार तथा समझ बदल गई।

इस ग्रन्थ के सम्पर्क में आने के पश्चात् व्यक्ति अंधकार से निकलकर प्रकाश की ओर आने लगता है। इसको पढ़ने के बाद मनुष्य के ज्ञानचक्षु खुल जाते हैं। उसे पाप–पुण्य, धर्म–अधर्म, सत्य–असत्य, जड़–चेतन, आदि का सत्य बोध हो जाता है।

इस सत्यार्थ प्रकाश ने ही भारत से अंधविश्वास, सती प्रथा को खत्म किया, जिसने नारी शिक्षा पर जोर दिया, विधवा विवाह शुरू कर उन्हें नया जीवन दिया। यदि सत्यार्थ प्रकाश न होता तो देश में एक विधवा नारी, इंदिरा गाँधी, देश की प्रधानमंत्री न बन पाती। ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें खोखली कर देने वाले इस अमर ग्रन्थ ने इस देश को संजीवनी दी।

आर्य समाज ने सत्यार्थ प्रकाश की कक्षाओं को **सोमवार 18 फरवरी से शनिवार 23 फरवरी, 2019** तक, **सायं 5 से 7 बजे** आर्य समाज में आयोजन किया है। इसमें **मुख्य विषय–निराकार ईश्वर, जीवात्मा, उत्तम आचरण, सुखी ग्रहस्थ, ईश्वर उपासना विधि, सन्तानों की शिक्षा रहेंगे।** यह पुस्तक विश्व की 20 से अधिक भाषाओं में उपलब्ध है।

यदि आपको जीवन में सत्य मार्ग की तलाश है तो अवश्य ही इस कार्यक्रम में सम्मिलित हों।

सभी कक्षाओं में उपस्थित प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र से पुरस्कृत किया जाएगा।

सभी प्रतिभागी अपने साथ नोटबुक और पैन लेकर आवें।

कृपया अपनी उपस्थिति के लिए श्री अजय कुमार (46678389)/श्री सुरेन्द्र प्रताप (9953782813) को सूचित करें।

प्रधान
विजय लखनपाल

मंत्री
राजेन्द्र कुमार वर्मा
विजय भाटिया (उपमंत्री)
वेद प्रचार समिति

आर्य समाज महिला सत्संग
संतोष रहेजा (प्रधाना)
अमृत पॉल (कार्यवाहक प्रधाना)
प्रेम शर्मा (मंत्राणी)

ARYA SAMAJ KAILASH–GREATER KAILASH-1 (Regd.) Regn. No. 3594/1968
New Delhi-110048 • Ph.: 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web. www.aryasamajgk1.org
An ISO 9001:2015 Certified Institution